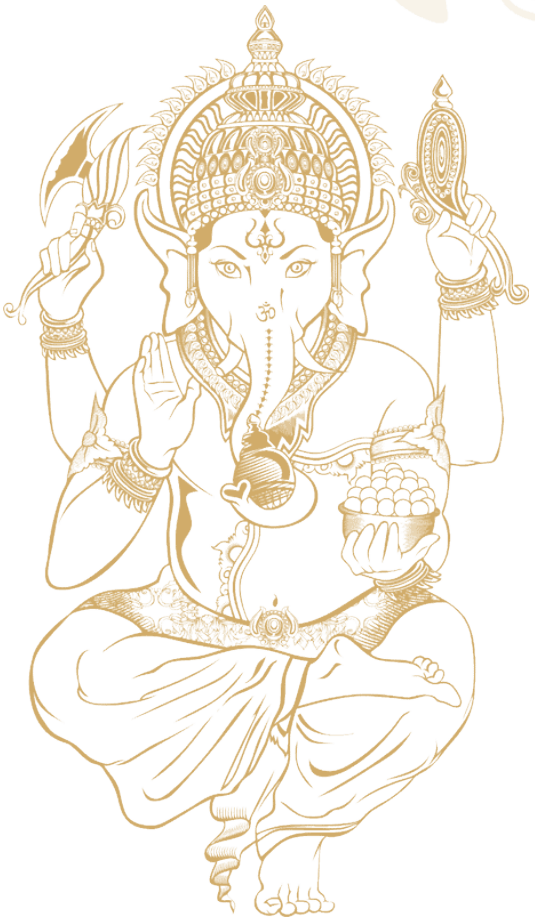

Mr.

10 Aug 2025

12:11 PM

Pune

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119094501**

तिथि 10/08/2025 **समय** 12:11:00 **वार** रविवार **स्थान** Pune **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:58
अक्षांश 18:34:00 उत्तर **रेखांश** 73:58:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	08:52:52 घं
वेलान्तर	00:05:22 घं
सूर्योदय	06:14:29 घं
सूर्यास्त	19:04:01 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	2
नक्षत्र	धनिष्ठा
योग	शोभन
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	सिंह
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	गे-गेंदा
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	गुरु
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

मंगल 0वर्ष 6मा 3दि
मंगल
10/08/2025
12/02/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/08/2025
चन्द्र	12/02/2026

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 1मा 22दि
पिंगला
10/08/2025
02/10/2025

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	10/08/2025
संकटा	12/09/2025
मंगला	02/10/2025

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			16:16:11	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			23:41:32	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	मंगल	मित्र राशि	1.94	आत्मा	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			05:41:55	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	चंद्र	सम राशि	1.18	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			07:50:46	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि	0.90	पुत्र	भ्रातृ	मित्र
बुध	व		10:05:37	कर्क	पुष्य	3	शनि	शुक्र	शत्रु राशि	1.03	मातृ	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			19:26:48	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	मंगल	शत्रु राशि	1.35	अमात्य	धन	सम्पत
शुक्र			17:33:28	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	सूर्य	मित्र राशि	1.27	भ्रातृ	कलत्र	सम्पत
शनि	व		07:04:14	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	सम राशि	0.83	ज्ञाति	आयु	क्षेम
राहु	व		24:17:44	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		24:17:44	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

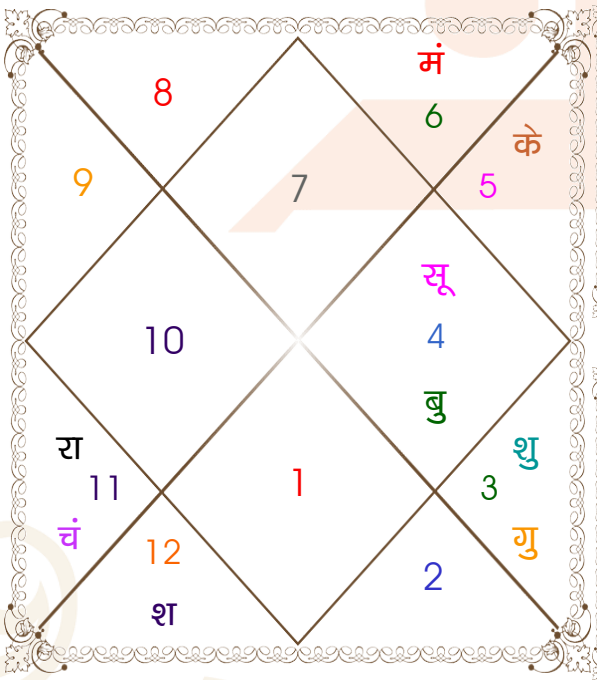

चन्द्र कुंडली

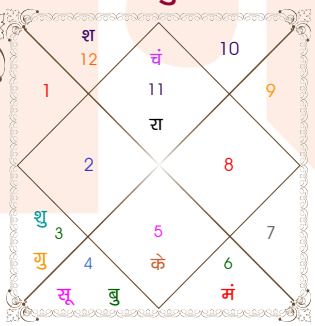

नवमांश कुंडली

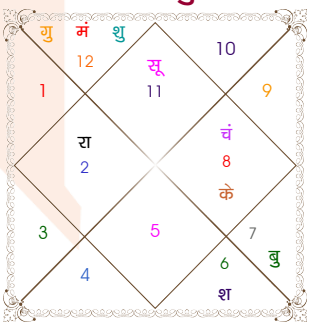

सर्वाष्टकवर्ग

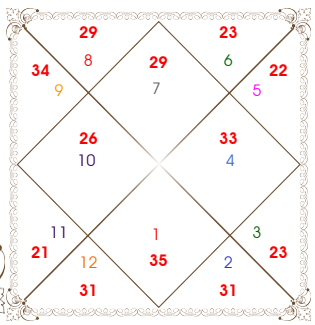

दशमांश कुंडली

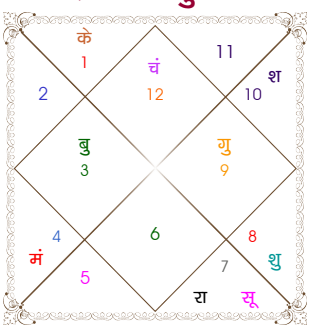

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

नक्षत्रफल

आप धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, गण राक्षस, नाड़ी मध्य, योनि सिंह तथा वर्ग मार्जार होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गे" अक्षर से होगा।

आपका चालचलन अच्छा रहेगा तथा सामान्यतया सदाचार का आप यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। व्यवहार कुशलता की आपमें प्रधानता रहेगी तथा अपनी बातों से अन्यजनों सहमत करवाने में भी आप को सफलता मिलेगी। अतः समाज में आप एक सम्माननीय तथा आदरणीय व्यक्ति समझे जाएंगे। धनवैभव से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा धनाढ्य पुरूष के रूप में प्रसिद्ध रहेंगे साथ ही आपके अर्न्तमन में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका आप जीवन में अनुपालन भी करते रहेंगे। इस प्रवृति से आपको समाज में दूर दूर तक ख्याति भी प्राप्त होगी। साथ ही आप एक प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली व्यक्ति भी होंगे एवं समाज के सभी वर्गों में आपका पूर्ण प्रभाव स्थापित रहेगा।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आप स्वभाविक रूप से आशावादी व्यक्ति होंगे तथा निराशा की भावना से सर्वदा दूर ही रहेंगे। अतः आप अल्प मात्रा में मानसिक कष्टों की प्राप्ति करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त प्रकार के सुख संसाधनों से सुसम्पन्न रहकर उनका उपभोग भी करेंगे।

आशालुर्वसुमान वसूद्रुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

संगीत शास्त्र के प्रति आपकी स्वभाविक रूचि रहेगी एवं इसका आप परिश्रमपूर्वक विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं संगीत के क्षेत्र में विशेष सफलता एवं ख्याति अर्जित करेंगे। आप अपने परिवार तथा बन्धुवर्ग में भी विशेष आदरणीय रहेंगे एवं अन्य सभी लोग आपको यथोचित स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही नाना प्रकार के सोने के गहनों तथा अन्य बहुमूल्य रत्नादि से भी आप सुसम्पन्न हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त कई लोगों के ऊपर आपका प्रभाव रहेगा एवं इनके मध्य आप परम सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

आप प्रारम्भ से ही दानशील प्रवृति से भी युक्त रहेंगे तथा समाज में जरूरतमन्द लोगों के लिए इस प्रवृति का पालन भी करते रहेंगे। आप में शौर्य गुणों की भी प्रधानता रहेगी तथा साहस एवं निर्भय होकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धन के प्रति भी आप का स्वभाव लालची रहेगा जिससे आप को यदा कदा अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना भी करना पड़ेगा।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

कुम्भ राशि में जन्म होने के कारण आपकी नाक ऊंची होगी तथा मस्तक एवं मुख भाग विस्तृताकार होंगे। साथ ही हाथ, पैर तथा कमर में भी स्थूलता विद्यमान रहेगी। आपकी शारीरिक सुन्दरता आकर्षक रहेगी परन्तु यदा कदा इसमें कोमलता का अभाव भी दृष्टिगोचर होगा। आप में आलस का भी प्रभाव रहेगा। शिल्प या चित्रकारी में आप निपुण रहेंगे तथा इस क्षेत्र में सफलता तथा सम्मान भी अर्जित करेंगे।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

नाना प्रकार के कार्यों को करने में आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप निपुणता भी प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही विविध प्रकार के शास्त्रों का भी आपको ज्ञान रहेगा एवं एक विद्वान के रूप में भी आप समाज में सम्माननीय रहेंगे। आपमें क्रोध की प्रवृतियों का आभाव होगा एवं स्वभाव से ही शान्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी आप नित्य सफल रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप के मन में कभी कभी कठोरकर्मों को करने की प्रवृति उत्पन्न होगी एवथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इनमें आप अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आप यात्रा करने तथा घूमने फिरने के लिए विशेष रूचिशील रहेंगे तथा अपना अधिकांश समय इसी पर व्यतीत करेंगे। धन के प्रति आप में लालच का भाव रहेगा। साथ ही अन्य जनों के धन प्राप्ति की भी कामना रखेंगे एवं जीवन में यत्नपूर्वक इसके लिए तत्पर भी रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति विषम रहेगी एवं इसमें हानि वृद्धि नित्य होती रहेगी। इसके साथ ही सुगन्धित द्रव्यों के लेपन के प्रति तथा पुष्पादि के लिए भी आप नित्य रूचिशील रहेंगे समय समय पर इनका उपभोग करते रहेंगे।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप उच्च श्रेणी के विद्वान होंगे तथा समाज में आपका यश व्याप्त रहेगा परन्तु आप अन्य विद्वानों को यथोचित आदर प्रदान नहीं करेंगे। इसके साथ ही आप में सुशीलता का भाव भी मध्यम रूप से ही विद्यमान रहेगा।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप जीवन में प्रायः विजय एवं सफलता कम से अर्जित करते रहेंगे एवं चरित्र से निर्मल होने के कारण आप अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय रहेंगे। धन सम्पत्ति में भी आप सम्पन्न रहेंगे। गुरूजनों के प्रति आपके मन में अनन्य श्रद्धा एवं भक्ति का भाव रहेगा एवं इनकी सेवा करने के लिए आप नित्य तत्पर भी रहेंगे। महिलावर्ग में भी आप लोकप्रिय रहेंगे एवं उनके पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आपका परिवार विस्तृत रहेगा तथा अपने जाति या वर्ग के कल्याणकारी कार्यों को सिद्ध करने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा जिससे आप बन्धुवर्ग में लोकप्रिय रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वप्रकार के सद्मित्रों से सुशोभित होकर उनका जीवन में यत्नपूर्वक अनुपालन करेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।

बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आप की गर्दन लम्बी रहेगी तथा नसे भी शरीर से स्पष्ट रूप से दिखाई देंगी। इसके अतिरिक्त अन्य महिलाओं से आपके सामाजिक तथा मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे। मित्रों से आपका विशेष स्नेह रहेगा एवं उनको सहायता तथा सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्परता का परिचय देंगे।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऊध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आप में नैसर्गिक रूप से दानशीलता की प्रवृति विद्यमान रहेगी अतः आप समय समय पर यथाशक्ति अपनी इस प्रवृति का भी अनुपालन करते रहेंगे। साथ ही अन्य जनों की भलाई के लिए भी कार्य करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। आप में कृतज्ञता का सद्गुण भी रहेगा एवं अन्य जनों से उपकृत होने पर भी आप उनका पूर्ण उपकार स्वीकार करेंगे एवं उनके प्रति हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। इसके अतिरिक्त विविध प्रकार के वाहन आदि से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके नेत्रों की सुन्दरता दर्शनीय रहेगी एवं बुद्धि भी छल रहित शुद्ध तथा सरलता से युक्त रहेगी। धन एवं विद्या को प्राप्त करने के लिए सतत परिश्रम तथा प्रयत्न करते रहेंगे एवं अपने अच्छे कार्यों के द्वारा समाज में ख्याति एवं सम्मान भी अर्जित करेंगे। साथ ही आप विशेष धनार्जन स्वपरिश्रम तथा बल से ही सम्पन्न करेंगे एवं साहस तथा निर्भयता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न तथा सिद्ध करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने वाली होगी। आप में कोमलता का भाव अल्प रूप में रहेगा परन्तु आप एक साहसी पुरूष होंगे अतः साहस पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। सत्य ही आप में क्रोध की भी अधिकता रहेगी एवं छोटी छोटी बातों पर उत्तेजित होते रहेंगे। शारीरिक बल का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा अन्य जनों से भी आपका परस्पर विवाद भी चलता रहेगा। फलतः समाज में अधिकांश लोगों के साथ आपका वैमनस्य रहेगा।

जीवन में यदा कदा आप प्रमेह तथा उन्माद रोगों से भी व्याकुलता की अनुभूति कर

सकेंगे। साथ ही आपका सौन्दर्य भी मध्यम ही रहेगा। आप अपने सम्भाषण में कभी कभी कटु शब्दों का उपयोग करेंगे जिससे श्रोता तथा अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति पूर्ण रूप से धार्मिक रहेगी एवं समस्त धार्मिक कार्यकलापों का आप निष्ठापूर्वक पालन करेंगे। आपके कार्य प्रायः अच्छे ही होंगे तथा आपके कार्यों से अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे आप में सद्गुणों की भी बहुलता रहेगी तथा आप जीवन में पूर्ण रूपेण इनसे सुसम्पन्न रहकर समाज में पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही अपने परिवार तथा कुल की उन्नति के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा इसको समृद्धि प्रदान करने में अपना प्रमुख योगदान प्रदान करेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य

प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए चैत्रमास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रानक्षत्र, गंडयोग, वणिज करण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 मार्च से 19 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र गंडयोग, वणिजकरण में कोई भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर एवं धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूपेण सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव कुबेर की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। साथ ही शनि के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 19000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपकी समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी तथा शारीरिक व्याकुलता में भी न्यूनता आएगी। साथ ही सर्वत्र अशुभ प्रभाव समाप्त होंगे एवं शुभ प्रभावों में भी वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।